माहेश्वरसूत्रों का तत्त्वज्ञान

डॉ. हर्षदेव माधव, सेवानिवृत्त अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, एच.के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद

पाणिनीय व्याकरण माहेश्वरसूत्रों पर आधारित है । ये सूत्र भगवान् महेश्वर ने अपनी डमरू की आवाज़ से उत्पन्न किए हैं ऐसा माना जाता है । पाणिनि ने हिमालय पर तप करते हुए भगवान् की आराधना के समय सहसा भगवान् शिव के डमरू की आवाज़ सुनी और उनको माहेश्वरसूत्र प्राप्त हुए, ऐसा माना जाता है । ये सूत्र निम्नलिखित हैं :

अ	इ	उ	ण् ।	ऋ	ऌ	क् ।		
ए	ओ	ङ्	।	ऐ	औ	च् ।		
ह	य	व	र	ट् ।	लण्	।		
ञ	म	ङ	ण	न	म्	।		
झभञ्	घ	ढ	ध	ष् ।				
ज	ब	ग	ड	द	श्	।		
ख	फ	छ	ठ	थ	च	ट	त	व् ।
क	प	य्	। श	ष	स	र्	।	
ह	ल्	।						

महेश्वर – ये सूत्र माहेश्वर सूत्र हैं अर्थात् भगवान् महेश्वर के द्वारा उनका उद्भव हुआ है । तंत्र में रुद्र, ईश्वर, शिव और महेश्वर अलग हैं । शिवसूत्र के अनुसार सदाशिव या महेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं । रुद्र तीन देवों में एक है । ब्रह्मा सृष्टिसर्जक हैं, विष्णु पालक हैं और रुद्र संहारक हैं । ईश्वर स्फुट इदन्ता एवं अहन्ता का समानाधिकरण रूप जैसा विश्वग्राह्य है । ईश्वरभट्टारक से अधिष्ठित है – मन्त्रेश्वर – वर्गरूप ग्राहक ।

सदाशिव तत्त्व – अहन्ताच्छादित स्फुट इदन्तात्मक परापररूप विश्वग्राह्य है । सदाशिव मन्त्रमहेश्वरः। (सदाशिव भट्टारक से अधिष्ठित मन्त्रमहेश्वर प्रमाता ।[१])

१. ''शिवसूत्र सिद्धान्त और साधना'' डॉ. श्यामाकांत द्विवेदी आनंद चौखम्बा सुर भारती प्रकाशन, वाराणसी, २०१५, पृ. २१

संक्षेप में भगवान महेश्वर शैवदर्शन में सर्वोच्च तत्त्व हैं । पाणिनीय व्याकरण के टीकाकार, इन सूत्रों की रचना भगवान् महेश्वर ने की है, ऐसा मानते हैं।[२] सूत्रों की रचना क्यों हुई? माहेश्वर सूत्रों के बारे में एक प्रसिद्ध श्लोक है –

नृत्तावसाने नटराजराजो
ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान्
एतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ।।

ये सूत्र सनकादि सिद्धों के लिए बनाये गए हैं । इसका प्रयोजन मुक्ति है । केवल वाग्व्यवहार या संसार में व्यवहार चलाना नहीं है । सनत्कुमार सदैव मोक्षपरायण सिद्ध ऋषि हैं । शाक्ततंत्र में सनत्कुमारों ने ''सनत्कुमारतन्त्रम्'' की रचना की है । सनत्कुमार भगवती पराम्बा के उपासक थे । अतः माहेश्वरसूत्रों का सम्बन्ध शाक्ततंत्र के साथ भी है।[३]

चौदह की संख्या का राज़ : माहेश्वरसूत्र की चौदह संख्या क्यों है? एक और चार का योग पाँच होता है । अर्थात् माहेश्वरसूत्र पञ्चवक्त्र शिव से निर्मित हैं और इनका प्रयोजन भी संसारमुक्ति है । चौदह विद्याएँ, चौदह भुवन प्रसिद्ध हैं अर्थात् शिव के डमरू की आवाज़ से चौदह भुवनों में क्षोभ हुआ था, या तो स्पंदन हुआ था । चार वेद, छः वेदांग, मीमांसा, तर्कविद्या, धर्मशास्त्र और पुराण से चौदह विद्याएँ बनती हैं। इस तरह भाषा के उद्भव से विद्या का अवतरण हुआ – यह तात्पर्य है।[४]

श्रीयंत्र में सर्वसौभाग्यदायक चक्र चौदह त्रिकोणों से बनता है। यह लिखने वाले का मानना है कि माहेश्वर सूत्र भी भाषा का सर्व सौभाग्यदायक चक्र है । इसकी चर्चा बाद में करेंगे।

चौदह की संख्या का यहां दूसरी तरह से भी विभाजन हुआ है जो श्लोक में बताया गया है नव और पाँच । श्रीयंत्र के नव चक्र हैं और भगवान् शिव के पाँच मुख अर्थात् माहेश्वर सूत्र शिव और शक्ति का संगम है । माहेश्वरसूत्र में से नव सूत्र और पाँच सूत्रों का विभाजन करने से डमरू के दो अर्धभाग हो सकते हैं । शिवसूत्र के अनुसार भगवान् शिव की पाँच शक्तियाँ हैं। ये शक्तियाँ हैं –

(१) आनंदशक्ति (२) इच्छाशक्ति (३) ज्ञानशक्ति (४) क्रियाशक्ति (५) मायाशक्ति ।

माहेश्वरसूत्रों के द्वारा शिव की इन पाँच शक्तियों का अवतरण हुआ है।[५] ज्योतिष में नव–पंचम योग होता है, यहाँ शिव–शक्ति का नवपंचम योग है ।

---

२. ''अष्टाध्यायी'' भूमिकाखण्ड, सम्पादक–डॉ. किशोरचन्द्र पाठक, गोपालकृष्ण ट्रस्ट, जूनागढ़–१९९९, पृ. १७२
३. ''तंत्रसंग्रहः'' चतुर्थो भागः, सम्पादक–आचार्य रामप्रसाद त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी, १९९६, पृ. १७४ तः २२१
४. ऋषिराज जानी, राकेश जोशी 'ज्ञानकोश', पार्श्व पब्लिकेशन, २०१५, पृष्ठ ४९
५. ''शिवसूत्र सिद्धान्त और साधना'', पृ. २०

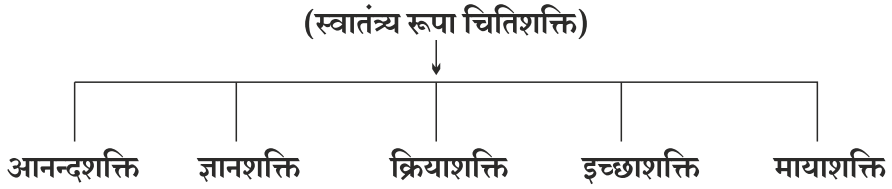

भगवान् शिव विश्वग्राह्य हैं और परमात्मा ग्राहक । भगवान् महेश्वर ने माहेश्वर सूत्रों के द्वारा विश्व को ग्राह्य बनाया है । नव की संख्या के साथ भी एक रहस्य है । श्रीचक्र में नव त्रिकोण है । लिपि के भी नववर्ग हैं । ये बात भूतमातृका की चर्चा में स्पष्ट होगी । वैसे सोलह की संख्या पूर्ण मानी जाती है । षोडशकलावान् पुरुष की औपनिषदिक अवधारणा भी हम जानते हैं। शिवसूत्रों में ज्ञान के बारे में अलग-अलग सूत्र हैं। 'ज्ञानं बन्धः। (शिवसूत्र, १-१-२)' दूसरा सूत्र है 'ज्ञानाधिष्ठानां मातृका'। (शिवसूत्र, १-४)। इस तरह भाषा बंधन का कारण भी है मोक्ष का कारण भी है । माहेश्वरसूत्र में पूरी मातृका समाविष्ट नहीं है । अगर पूरी मातृका हो तो यह मालिनी मन्त्र बन जाता है । इसलिए चौदह की संख्या सूचित करती है कि माहेश्वर-सूत्रों के बाहर कुछ बातें हैं या तो माहेश्वरसूत्रों के जानने के बाद भी कुछ अवशिष्ट रहता है । माहेश्वरसूत्र पर नज़र डालेंगे तो ''अ, इ, उ, ण्, ऋ, लृ, क्, ए, ओ, ङ्, ऐ,औ, च्'' - ये स्वर के सूत्र हैं जिसको अच् प्रत्याहार से हम जानते हैं । लेकिन यहाँ दीर्घ 'ई' दीर्घ 'ऊ', 'आ' दीर्घ 'ॠ' ये पाँच स्वर नहीं हैं । शाक्ततंत्र के अनुसार ह्रस्व स्वर शिव है और दीर्घ स्वर शक्ति।[६] जिस तरह शक्ति के स्वर गूढ़ हैं इसी तरह मातृका के क, क्ष और ज्ञ ये वर्ण भी माहेश्वरसूत्रों में निहित नहीं हैं। 'अ' से शुरू हो कर 'क्ष' तक विस्तृत वर्णमाला में 'क्ष' और 'ज्ञ' का महत्त्वपूर्ण स्थान है । आज्ञाचक्र के 'हं' और 'क्षं' बीज हैं।[७] इसलिए माहेश्वर सूत्रों के द्वारा ज्ञानप्राप्ति के बाद आज्ञाचक्र के बीज 'क्ष' का ज्ञान अवशिष्ट रहता है । माहेश्वरसूत्रों में पाँच ह्रस्व और चार दीर्घ स्वर शिव और शक्ति का सायुज्य सूचित करते हैं। किन्तु पाँच की संख्या शिव का प्रभुत्व सूचित करती है। इसलिए पाँच शिवत्रिकोण और चार शक्तित्रिकोणवाला माहेश्वरसूत्र शिव का श्रीयंत्र है। माहेश्वरसूत्रों में ४३ वर्ण हैं। श्रीयंत्र में भी ४३ त्रिकोण हैं, लेकिन माहेश्वरसूत्र 'अ' से शुरू होते हैं और 'ह' से पूर्ण होते हैं । 'ह' भी भगवान् शिव का वाचक है।

माहेश्वरसूत्रों में 'अं' और 'अः' स्वर भी नहीं हैं। 'अं' परमात्मा का वाचक है और 'अः' शक्ति का वाचक है । इसलिए माहेश्वरसूत्रों को सिद्ध करने के लिए अनुस्वार के साथ पाठ करना पड़ेगा । यह तांत्रिक रहस्य है ।

---

६. ''मंत्रना रहस्यो, मंत्रोद्धार खने यंत्रसिद्धियो'' : डॉ. हर्षदेव माधव, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, (द्वितीय-२०१०, पृ. ६)

७. ज्ञाननिधि, संपादक : ऋषिराज मनी, डॉ. विनोदचन्द्र जी. पटेल, खुशबू प्रकाशन-२०१५, पृ. ६४

माहेश्वरसूत्र में शिव प्रधान है, इसका कारण यह है कि माहेश्वरसूत्रों में पैंतीस बार 'अ' आता है।[८]

मा.सू.	आदि	इत्		
१	अ / इ / उ	ण	३	
२	ऋ / ऌ	क	५	
३	ए / ओ	ङ्	७	
४	ऐ / औ	च	९	
५	ह (अ) / य् (अ) / व् (अ) / र् (अ)	ट्	१३	
६	ल्(अ)	ण	१४	
७	ञ् (अ) / म्(अ) / ङ् (अ) / ण् (अ) / न्(अ)	म्	१९	३०५
८	झ्(अ) / भ्(अ)	ञ	२१	
९	घ्(अ) / ढ्(अ) / ध्(अ)	ष	२४	
१०	ज्(अ) / ब्(अ) / ग्(अ)			
	ड्(अ) / द्(अ)	श	२९	
११	ख्(अ)/ फ्(अ) / छ्(अ) / ठ्(अ) / थ्(अ) च् (अ)			
	ट्(अ) / त्(अ)	ठ	३७	
१२	क्(अ) / प्(अ)	ट	३९	
१३	श्(अ) / ष्(अ) / स्(अ)	र्	४२	
१४	ह्(अ)	ल	४३	

अष्टाध्यायी का अन्तिम सूत्र ' अ अ ' है । इसमें दूसरा 'अ' संवृत है । इस तरह ये छत्तीस शिवसूत्र के छत्तीस तत्त्वों के समान माहेश्वरसूत्र में व्याप्त हैं। इस तरह माहेश्वरसूत्रों में छत्तीस तत्त्वों वाले ब्रह्माण्ड का विस्तार है।

*** 'ह' वर्ण का रहस्य:–**

माहेश्वरसूत्र में दो बार 'ह' आता है (१) हयवरट् पाँचवें सूत्र में और (२) 'हल्' चौदहवें सूत्र में। भाषाविज्ञान की दृष्टि से पहला 'ह' सघोष महाप्राण है और दूसरा 'ह' अघोष अल्पप्राण है । दूसरे 'ह' का उच्चारण हम विसर्ग के रूप में करते है । जैसा कि रामः, रामौ, रामाः इत्यादि । अर्थात् चौदहवें सूत्र

८. ''अष्टाध्यायी'' भूमिकाखण्ड, पृ. १८१

का 'ह' विसर्ग है और विसर्ग शक्ति है । इस तरह माहेश्वरसूत्रों का प्रपंच 'अ' से शुरू होता है और विसर्ग में समाप्त होता है । अन्य शब्दों में कहें तो शिव से उत्पन्न सृष्टि महामाया में विलीन होती है और भाषा मौन के गर्भ में विलीन हो जाती है । यही माहेश्वरसूत्रों का रहस्य है अथवा 'अ' से शुरु हो कर विसर्ग तक की सृष्टि शिवशक्तिमय है । माहेश्वरसूत्रों में भले ही 'आ' की गिनती ना हो किन्तु अष्टाध्यायी की शुरुआत 'वृद्धिरादैच्' (१-१-१ , अष्टाध्यायी) से होती है और 'अ अ' अर्थात् शिव और शक्ति के दो बिंदु अलग होने के साथ सृष्टि का विलय होता है इसलिए माहेश्वरसूत्रों में 'आ' के रूप में महामाया और संवृत 'अ' के रूप में भगवान् शिवसूत्र में न होते हुए भी परापर रहस्य के रूप में व्यंग्यार्थ के रूप में गुप्त हैं।(सूत्र-अ अ। अष्टा.८-४-६९)

तैत्तिरीय आरण्यक २-३-६ एवं ऐतरेय आरण्यक ३-६-७ में कहा गया है कि 'अकारो वै सर्वा वाक्' ।[९] 'अ'कार के बारे में 'कामधेनुतन्त्र' का कथन है -

शृणु तत्त्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोशमयं सदा ।।
पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तित्रयसमन्वितम् ।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।।
बिन्दुतत्त्वमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपधृक् ।।[१०]

(कामधेनुतन्त्रम् १-१२ तः १४)

ऋग्वेद (अग्निमीळे...) और सामवेद (अग्ने आयाहि...) का प्रथम मन्त्र 'अ' से शुरू होता है । भगवान् कृष्ण भगवद्गीता में 'अक्षराणामकारोऽस्मि' कहते हैं । (भ.गी.१०-३३) 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' (ब्रह्मसूत्र-१-१-१) 'अथ योगानुशासनम्' (योगसूत्र १-१-१) आदि अनेक ग्रन्थों का आरम्भ 'अ' से होता है । 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा' (कुमारसम्भवम् १-१) भी प्रसिद्ध है ।

*** माहेश्वरसूत्रों के तीन कूट**

शारदातिलक तंग के अनुसार सोलह स्वर चन्द्र से उत्पन्न होते हैं । स्पर्श-व्यंजन सूर्य से उत्पन्न होते हैं और व्यापक यानी य, र, ल, व, श, ष, स, ह और क्ष आज्ञेय हैं । माहेश्वरसूत्रों में प्रथम चार सूत्रों में सौम्य स्वर हैं, जो चन्द्र से उत्पन्न हैं, पाँचवें और छठे सूत्र में एवं तेरहवें सूत्र में आज्ञेय वर्ण हैं और

९. 'गणितसूत्रम्' प. पू. स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती, स्वाति प्रकाशन संस्थान, गोवर्धनमठ, पुरी,२०१२ : पृ. ४६
१०. 'तन्त्रसंग्रह :' द्वितीयो भागः, सं.म.म. गोपीनाथ कविराजः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी, २००२, (तृतीय) पृ. ११२

बाकी के सूत्रों में सौर वर्ण है । इस तरह श्रीविद्या की तरह यहाँ भी सूर्य, चन्द्र और अग्नि के तीन कूट हैं। व्यंजनों में 'म' परमात्मा है और चौबीस व्यंजन आत्मस्वरूप हैं ।[११] अब माहेश्वरसूत्र को देखिए,

अ,इ,उ,	आज्ञा (ह-क्ष)	विशुद्ध स्वर (अ इ उ)	अनाहत (क-ठ)	मणिपुर ड-फ	स्वाधिष्ठान ब - ल	मूलाधार व - स
ऋ लृ क्		ऋ लृ	क्			
ए ओ ङ्		ए ओ	ङ्			
ऐ औ च्		ऐ औ	च्			
ह य व र ट्	ह		ट्		य, व, र	
ल ण्				ण	ल	
ञ म ङ ण न म्			ञ्, ङ्	ण, न	म, म्	
झ भ ञ्			झ, ञ्		भ	
घ ढ ध ष्			घ	ढ, ध		ष्
ज ब ग ड द श्			ज, ग	ड, द	ब	श्
ख फ छ ठ थ च ट त व्			ख छ च ट	फ, ठ, थ, त		व्
क प य्			क	प	य	
श ष स र्					र्	श ष स
ह ल्	ह				ल्	
	२	९	१६	१३	११	६

यहाँ स्पष्ट होता है कि आज्ञाचक्र के वर्ण 'ह' की अनुपस्थिति है । विशुद्धचक्र के सात स्वर भी अनुपस्थित हैं। इसलिए माहेश्वरसूत्र में चैतन्य के लिए बीजमन्त्रों की आवश्यकता रहेगी । एक विशेष बात यह हैं कि यह ज्यादातर सूत्रों में एकसाथ कई चक्रों का अनुसंधान होता है । इसलिए चक्रजागृति में माहेश्वरसूत्र अधिक उपादेय हैं – ऐसा यह लिखने वाले का मानना है।

११. 'शारदातिलकतंत्रम्' सम्पादक-डॉ. सुधाकर मालवीय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठानम्, दिल्ली, २०१४, पृ. ६८-७५ और 'मन्त्रनां रहस्यों, मंत्रोद्धार अने यन्त्रसिद्धियो', पृ. ९-१२

*** भूतमातृका और भूतनाथमातृका**

शाक्ततंत्र परंपरा में एवं भूतभाषा में भूतमातृका का प्रचलन है । भूतमातृका में ४२ वर्ण हैं जो निम्नलिखित हैं :

पञ्च ह्रस्वाः सन्धिवर्णा व्योमेराग्निजलं धरा ।
अन्त्यमाद्यं द्वितीयञ्च चतुर्थं मध्यमं क्रमात् ।।
पञ्चवर्गाक्षराणि स्युर्वान्तं श्वेतेन्दुभिः सह ।
एषा भूतमातृका प्रोक्ता द्विचत्वारिंशदक्षरैः ।।[१२]

*भूतमातृका में नव वर्ग है जो निम्नलिखित है:

१. अ इ उ ऋ लृ
२. ए ओ ऐ औ
३. ह य व र ल
४. क ख ग घ ङ्
५. च छ ज झ ञ्
६. ट ठ ड ढ ण्
७. त थ द ध न
८. प फ ब भ म
९. श ष स = ४२

यहाँ भूतमातृका ४२ वर्ण में विस्तृत है और नव वर्ग में विभक्त है । उपर्युक्त नव वर्गों में क्रमशः अकार, एकार, ककार, चकार, टकार, तकार, पकार, सकार तथा शकार आद्य अक्षर हैं। ये नव वर्ग प्रथम अक्षर के क्रम से आकाशादि पञ्चमहाभूत हैं। विस्तार से विवरण करेंगे तो –

अ, ए, ह, ड, ञ्, ण, न, म, श – आकाशरूप महाभूत हैं, इ, ऐ, य, क, ट, त, प, ष – ये वायुरूप महाभूत हैं, उ, ओ, ख, छ, ठ, थ, फ, ब, स – तेजरूप महाभूत हैं, ऋ, औ, घ, झ, ढ, ध, भ – जलरूप महाभूत हैं । लृ, ल, ग, ज, ड, द, ब – पृथ्वी वर्ग हैं ।

१२. 'शारदातिलकतन्त्रम्', ७-२-३, पृ. ४०७

*** नव वर्गों के देवता**

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, अश्विनीकुमार, प्रजापति, इन्द्र, यम, वरुण और सोम ये क्रियादि शक्तियों के साथ इन वर्गों के देवता हैं । भूतमातृका के दक्षिणामूर्ति ऋषि हैं, गायत्री छंद है और वर्णेश्वरी परा देवता है।

माहेश्वरसूत्र भगवान् भूतनाथ की मातृका है । भूतमातृका में ४२ वर्ण हैं और माहेश्वरसूत्र में ४३ वर्ण हैं । अब किस वर्ण की उपस्थिति के बाद भूतमातृका भूतनाथ की लिपि बन गई यह प्रश्न होता है । वैसे भूतमातृका का प्रचलन शाक्ततंत्र में और भूतभाषा में था । ऐसा मधुसूदन ओझा मानते हैं।[१३] भूतमातृका आगम शास्त्रों में और भूतभाषा में थी, लेकिन उनकी लिपि किस तरह लिखी जाती थी उसका पता नहीं है।

अब भूतमातृका और माहेश्वरसूत्र में एक ही वर्ण का अन्तर है। वह वर्ण है अन्तिम सूत्र हल् का 'ह'। जो वास्तविक रूप में विसर्ग है अर्थात् विसर्ग की उपस्थिति से भूतमातृका ही भूतनाथ मातृका अर्थात् माहेश्वरसूत्र हो गई है । विसर्ग का ऐसा चमत्कार क्यों? भगवान् शंकराचार्य सौन्दर्यलहरी के प्रथम श्लोक में स्पष्ट कहते हैं कि – शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं.....।

(सौन्दर्यलहरी –१)

जिस तरह ह्रस्व 'इ' के जुड़ने से 'शव' शिव हो जाता है उसी तरह विसर्ग की उपस्थिति में भूतमातृका माहेश्वरसूत्र बन गई है। क्योंकि विसर्ग स्वयं शक्ति है और शक्ति के संचरण से शव में शिवत्व प्रगट होता है । कामधेनुतंत्र का 'श' के बारे में विवरण देखिए :

अःकारं परमेशानि विसर्गसहितं सदा ।
अःकारं परमेशानि रक्तविद्युत्प्रभामयम् ।।
पञ्चदेवमयो वर्णः पञ्चप्राणमयः सदा ।
सर्वज्ञानमयो वर्ण आत्मादितत्त्वसंयुतः ।।
विन्दुत्रयमयो वर्णः शक्तित्रयमयः सदा ।
किशोरवयसः सर्वा गीतवाद्यादितत्पराः ।।
शिवस्य युवती एता मूर्तिमत् कुण्डली स्वयम् ।।[१४]

इस तरह शिवयुवती के द्वारा अर्थात् विसर्ग के द्वारा यह चमत्कार हुआ है ।

---

१३. 'वर्ण समीक्षा' –पं. मधुसूदन ओझा, राजस्थान संस्कृत अकादमी, १९९५, पृ. १०

१४. 'कामधेनुतन्त्रम्' तृतीयः पटलः–९ तः ११ श्लोकाः, पृ. ११६–११७

*** वर्णेश्वरी ध्यान**

अङ्कोन्मुक्तशशाङ्कोटिसदृशीमापीनतुङ्गस्तनीं
चन्द्रार्द्धाङ्कितमस्तकां मधुमदामालोलनेत्रत्रयाम् ।
बिभ्राणामनिशं वरं जपवटीं विद्यां कपालं करै –
राद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये ।। [१५]

शारदातिलकतंत्र में न्यास का भी वर्णन है । सृष्टिक्रम में विसर्ग लगाकर न्यास करना चाहिए । स्थितिक्रम में बिंदु और विसर्ग लगाकर न्यास करना चाहिए और संहारक्रम में प्रत्येक वर्ण के विपरीत क्रम से बिन्दु लगाकर न्यास करना चाहिए ।

*** आवरणपूजा**

भूतमातृका के आठ आवरणों में वर्णेश्वरी की पूजा होती है । अष्टदल कमल के भूपुर के चार द्वार हैं । वहाँ से लेकर आठ आवरणों में पूजा होती है । विस्तार - भय से शारदातिलकतंत्र में आवरणपूजा को देखने की विनती है ।

*** माहेश्वरसूत्रों में मन्त्रचैतन्य**

स्थूलरूप में माहेश्वरसूत्र भी वैखरी वाणी का स्वरूप हैं इसलिए चैतन्यहीन हैं। माहेश्वरसूत्रों में चैतन्य के लिए निम्नलिखित उपाय परमेश्वरी की कृपा से और गुरुकृपा से बताये जाते हैं –

(१) वागीश्वरी मन्त्र से संपुटित करके माहेश्वरसूत्रों का जप करें ।
(२) प्रत्येक वर्ण के साथ और अनुस्वार लगा कर जप करें । जैसे कि अं नमः, इं नमः, उं नमः, ऋं नमः इत्यादि ।
(३) माहेश्वरसूत्रों का अनुलोम-विलोम पाठ करें ।
(४) अनुस्वार और विसर्ग लगाकर सूत्रपाठ करें ।
(५) वागीश्वरी बीज के साथ प्रत्येक वर्ण का एक लक्ष जप करें ।

माहेश्वरसूत्रों के पाठ के पूर्व- हं, यं, रं, वं, लं- इन पाँच अक्षरों में अपने में पञ्चवक्त्रशिव की भावना करके ऊर्ध्वमुख, पूर्वमुख, दक्षिणमुख, उदङ्मुख और पश्चिममुख में एकाग्र चित्त से न्यास करें ।

१५. 'शारदातिलकतंत्रम्' ७-१५, पृ. ४१०

शारदातिलक तंत्र में पाँचों महाभूत के यंत्र भी बताये हैं। लेकिन विस्तारभय से यहाँ उसकी चर्चा नहीं है । सर्वसिद्धियों के लिए हंसवागीश्वरी मन्त्र अर्थात् ॐ ह्रीं ऐं क्लीं, ॐ सरस्वत्यै नमः के संपुट से माहेश्वरसूत्रों का जप करने से सर्व सिद्धियाँ भगवती वागीश्वरी स्वयं देती है । ऐसा यह लिखने वाले का मानना है ।

*** श्रीयंत्र और माहेश्वरसूत्र**

- श्रीयंत्र में ४३ त्रिकोण होते हैं, माहेश्वरसूत्र में ४३ वर्ण हैं ।
- श्रीयंत्र में चौदह त्रिकोणवाला चक्र सर्वसौभाग्यदायक चक्र है, माहेश्वरसूत्र की संख्या भी चौदह है ।
- श्रीयंत्र में पाँच अधोमुख त्रिकोण और चार अधोमुख त्रिकोण होते हैं, यह शाक्तपूजा है । शैवपूजा में पाँच ऊर्ध्वमुख त्रिकोण और चार अधोमुख त्रिकोण होते हैं । श्रीयन्त्र को पूर्व-पश्चिम दिशा में परिवर्तन करके श्रीयंत्र में शिव की पूजा होती है ।
  माहेश्वरसूत्रों में अ, इ, उ, ऋ, लृ - पाँच शिव स्वर हैं, ए ओ, ऐ औ - चारशक्ति स्वर हैं। यहाँ भी आ, ई, ऊ, ॠ, अः - ये पाँच शक्ति स्वर छिपे हैं । शिव के चार वर्ण अं, ळ, क्ष, ज्ञ - ये वर्ण यहाँ तिरोहित हैं । इस तरह माहेश्वरसूत्रों में शिव के पीछे शक्ति छिपी है ।
- माहेश्वरसूत्र अ से अः (हल् प्रत्याहार के 'ह' का विसर्ग) तक है । यहाँ शिव से सूत्रजाल शुरू होता है, विसर्ग में समाप्त होता है । हल् (अः) ने सारे सूत्रों का भार गोवर्धन की तरह उठाया है, जैसा कि शाक्ततंत्र में शक्ति 'पञ्चकृत्यपरायणा' सृष्टि का भार उठाती है।
- श्रीयंत्र का पूजन सम्पूर्ण मातृका एवं बीजमन्त्रों से होता है, माहेश्वरसूत्र में सम्पूर्ण मातृका नहीं है, ४३ वर्ण ही हैं। अतः माहेश्वरसूत्र में चौदहसूत्रों की चौदह कलाएँ हैं। षोडशी की षोडशकलाएँ व्यंजित हैं - या तो रहस्यार्थ है। 'तिरोधान' भगवती का कृत्य है। इसलिए शिवसूत्रों के नेपथ्य में भगवती को उनके अनुग्रह से जाना जा सकता है ।
- श्रीविद्या के तीन कूट हैं, इसी तरह माहेश्वर में भी आग्नेय, सौम्य और सौर वर्ण हैं ।
- चौदह कोणवाला सर्वसौभाग्यक चक्र की योगिनी सम्प्रदाययोगिनी है और वह सम्प्रदायार्थ सूचित करती है । माहेश्वरसूत्रों को यथार्थ व्याकरण के आचार्यों के द्वारा समझा जा सकता है । (देखिए प्रतिज्ञानुसिक्याः पाणिनीयाः। (अष्टाध्यायी १-२-३ उपदेशेऽजनुनासिक इत्। पर भट्टोजी दीक्षित की वृत्ति ।)

माहेश्वरसूत्र में सम्प्रदायार्थ है, इसका प्रमाण यह भी है कि प.पू. निश्चलानन्दसरस्वती ने 'माहेश्वरसूत्र' की सहायता से गणित के प्रत्याहार बनाये हैं।

अ	इ	उ	ऋ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ	म्
१	२	३	४	५	६	७	८	९	०

अण् इक् उङ् ऋच् ऌट् एम् ऐञ् ओष् औश् श स ् अशस्[१६]

अशस् प्रत्याहार में 'अ' एक का और 'श' शून्य का द्योतक मानकर उन्होंने अश=१०, इश=२०, उश=३०, ऋश=४०, ऌश् = ५०, एश=६०, ऐश=७०, ओश=८०, औश=९० और अश१ = १०, अश२ = १०० इस तरह माहेश्वरसूत्रों से 'गणितसूत्रम्' का निर्माण हुआ है।

माहेश्वरसूत्र वाणी की उपासना है इसलिए यहाँ भी श्रीयन्त्र के सर्वसौभाग्यदायक चक्र की तरह सर्व प्रकार के सौभाग्य की प्राप्ति संभव है। गुरु महाराज के पास से ये उपलब्धियाँ पाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

*** यन्त्रात्मक माहेश्वरसूत्र**

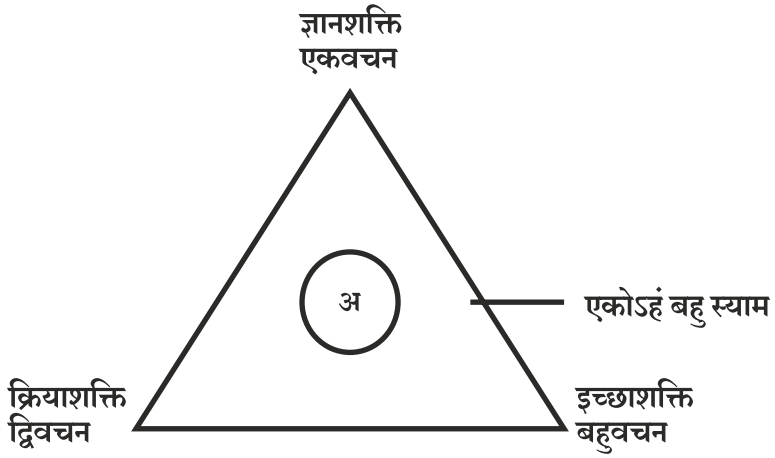

१६. गणितसूत्रम्, पृ. ३९

*** पाशशक्ति :**

चापशक्तिः

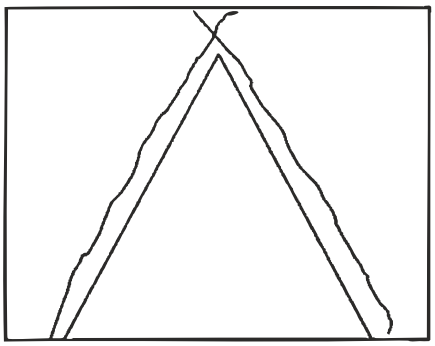

अङ्कुशशक्तिः

बाणशक्तिः

अहं रुद्राय धनुरातनोमि।

*** अष्टारचक्र**

– संबोधनसहित अष्टविभक्तियाँ

अथवा

(१) नाम (२) सर्वनाम (३) क्रियापद (४) क्रियाविशेषण (५) विशेषण (६) अव्यय (७) उपसर्ग (८) प्रत्यय

*** अंतर्दशार**

सशलकार

*** बहिर्दशार**

दश–गण

*** चतुर्दशत्रिकोण**

१४ माहेश्वरसूत्र
४१ प्रत्याहार (४१ का उलटा १४ होता है)

*** अष्टदल कमल**
शिव की अष्टमूर्तियाँ
अष्ट वर्ग मातृकाएँ

*** भूपुर**
दश दिक्पाल
दश सिद्धियाँ

समग्र चर्चा का निष्कर्ष यह है कि –

(१) माहेश्वरसूत्र अपने आप शिव के द्वारा प्रदत्त सिद्धमंत्र हैं।
(२) माहेश्वरसूत्रों में चैतन्य प्रदान करने के लिए वागीश्वरी बीज ऐं के संपुट के साथ पाठ करना चाहिए।
(३) उसका अनुलोम सांसारिक सुख एवं वाक्सिद्धि देता है। विलोम जप मोक्ष की ओर ले जाता है।
(४) माहेश्वरसूत्र केवल व्याकरण के लिए नहीं हैं, लेकिन आत्मा का उद्धार करने की दिव्यशक्ति इनमें निहित है।